THE WORLD BANK

SCERT पटना द्वारा विकसित एक मासिक पत्र

e-संवाद

December 2019 Vol. 02 No. 7

विषय सूची

1. अपनी बात
2. एक प्रज्वलित उल्कापिंड
3. विद्यालय का सबसे अच्छा मित्र– विद्यालय प्रबंधन समिति
4. एक शिक्षक को क्लास के लिए क्या–क्या करना चाहिए? या एक शिक्षक के द्वारा कक्षा कक्ष का प्रबंधन किस तरह होना चाहिए?
5. बच्चे की गरिमा
6. Teaching English as Second Language
7. हमने कीटाणुओं के बारे में कैसे जाना?
8. सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन एवं प्रशिक्षु शिक्षकों का क्षमतावर्धन
9. मिडलाइन सर्वे से प्राप्त अध्यापक शिक्षा– संस्थान के विकास सूचकांक सार संक्षेप
10. परख – 4
11. Maths Activity
12. Science Activity
13. SCERT-ISA द्वारा नवम्बर–दिसम्बर 2019 की गतिविधियाँ
14. बाल कविता- अब तो स्कूल जाते हैं

परामर्श दाता

विनोद कुमार सिंह (भा0प्र0से0)
निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

विनय पटनायक, टीम लीडर,
आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

संपादक मंडल

डा0 इम्तयाज आलम
विभागाध्यक्ष, श्रव्य दृश्य विभाग,
एस0सी0ई0आर0टी0 पटना

तेजनारायण प्रसाद
विभागाध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित
शिक्षा विभाग, एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

नलिन कुमार मिश्रा
सी0पी0डी0 लीड,
आई0एस0ए–एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

ग्राफिक्स डिजायन

सव्यसाची पांजा
आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

निदेशक की कलम से - शुभेच्छा

प्रिय शिक्षक साथियों,

प्रत्येक महीने e संवाद आप तक पहुँच रही है। आप सभी पढ रहे होंगे।

आप अपने अनुभव हमसे साझा करें। कई शिक्षक अपनी कविता भेजते है, जिसे प्रकाशित भी किया जा रहा है।

कई शिक्षक शिक्षा संस्थानों के सदस्य अपने आलेख अनुभव भी प्रकाशन के लिए भेजते है। हमे आप शिक्षको से भी अपेक्षा है कि वे भी अपने अनुभव भेजें। आप अपने विद्यालय वर्गकक्ष की गतिविधि को भेज सकते है। अनुभव को साझा करने से स्वयं के साथ–साथ अन्यों को भी लाभ होता है।

आप अपने विद्यालय की विशेष उपलब्धि, विद्यालय शिक्षा समिति, बाल संसद, मीना मंच आदि के बारे में अवश्य साझा करें।

मुझे आशा और पूर्ण विश्वास है कि आप सभी अपने शिक्षण अभ्यासों को उत्तरोत्तर विकास करने में सफल हो रहे होंगे। आप सभी के प्रयास से e संवाद राज्य के सुदूर क्षेत्रों में भी साधक शिक्षकों को हमेशा प्राप्त होता रहेगा और लाभान्वित होते रहेंगे।

आप अपने विचार से हमें आप जरूर अवगत कराएंगे।

आपका

विनोद कुमार सिंह
निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0,
पटना

एप्प कॉर्नर

Kahoot App की सहायता से हम और आप कभी भी कही भी बैठे बैठे खेल सकते है खेल खेल में सीख सकते हैं।

Kahoot App निम्नलिखित कार्य के लिए हम अपने उपयोग में ला सकते है।

1. क्विज़ निर्माण
2. लाइव गेम
3. सामान्य ज्ञान
4. होमवर्क
5. दूरस्थ प्रशिक्षण

– ***शिवेन्द्र प्रकाश सुमन***
सॉफ्टवेयर डेवलपर
आई०एस०ए० –
एस०सी०ई०आर०टी०, पटना

GET IT ON Google Play

Link: https://cutt.ly/Ze8PiK9

अपनी बात

प्रिय मित्रों,

e संवाद के नए अंक के साथ पुनः उपस्थित हूँ।

नवबंर महीने में हम अपने भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती 11 नवबंर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया हैं। कई तरह के कार्यक्रम का आयोजन किया गया होगा। कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा हमसे भी साझा करें ताकि और साथी भी लाभान्वित हो सके।

दिसम्बर में हम 22 तारीख को राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में महान गणितज्ञ श्री रामानुजम की जयंती मनाते है। इस दिन आप अपने विद्यालय में गणित की रोचक गतिविधि बच्चों के साथ आयोजित कर सकते है। दैनिक जीवन में गणितीय अनुभव एवं उपयोग से बच्चों को परिचित करा सकते है। बच्चो में गणित के प्रति अरूचि को समाप्त करने में एक पहल किया जा सकता है। आशा है आप इसे अवश्य करेंगे। हमें भी अपनी की गई गतिविधियों से अवगत कराएंगें। इस अंक में हम श्री रामानुजम के जीवन से संबंधित आलेख आपसे साझा कर रहा हूँ। साथ ही गणित की एक रोचक गतिविधि भी दिया जा रहा है।

प्रत्येक माह हम परख नाम से एक स्तंभ दे रहे हैं। जिसमें कुछ प्रश्नों के आधार पर आप स्वयं अपना मूल्यांकन कर सकते है। आपने किया भी होगा। आप हमसे भी अपने अनुभव साझा करे।

सभी शिक्षा संस्थानों के विभिन्न बिंदुओं पर एक आकलन किया गया था। आकलन के रिपोर्ट इस अंक के साथ साझा कर रहा हूँ।

इस अंक में विभिन्न नियमित स्तंभो के साथ तीन आलेख “बच्चों की गरिमा” “विद्यालय का सबसे अच्छा मित्र” और "शिक्षक को क्लास में क्या करना चाहिए" दिए गए है। ये आलेख आपको अपने विद्यालय के क्रियाकलापों को संचालित करने में मदद करेगी, ऐसी अपेक्षा है।

आप अपने विद्यालय मे होने वाले कार्यक्रम से हमें भी अवगत कराएँ।

आशा है यह अंक आपको अच्छा लगेगा।

सधन्यवाद

आपके विचार और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

e संवाद परिवार

एक प्रज्वलित उल्कापिंड

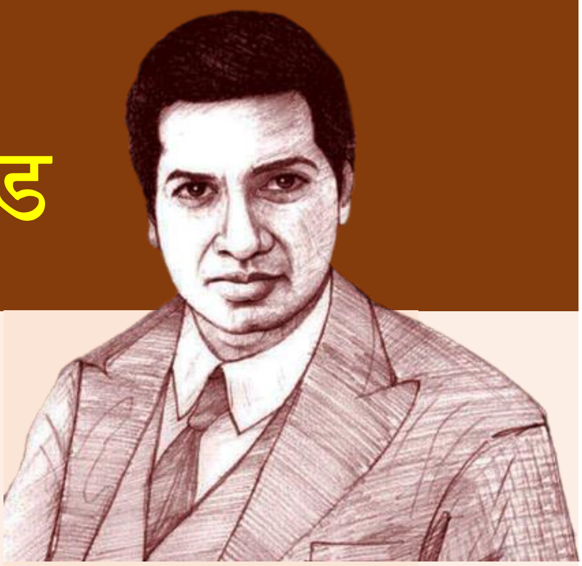

"जीवन लंबा होने के बजाय महान होना चाहिए" – एक पुरानी कहावत है। हमने कुछ जीवन देखे हैं जिन्होंने इसे सच साबित किया है। श्रीनिवास रामानुजन ऐसी दुर्लभ आत्माओं में से एक हैं, जिन्होंने अपने जीवन के छोटे से समय में यह कहावत को सही साबित किया।

भारत के महानतम गणितज्ञों में से एक श्री निवास रामानुजन की संख्या के सिद्धांत में योगदान गहरा रहा है। वह वास्तव में बीसवीं सदी की गणितीय प्रतिभा थी। भारत का यह प्रतिभावान हर समय महान जैसे कि यूलर और जैकोबी से तुलना की जाती है। रामानुजन केवल 32 वर्षों तक जीवित रहे लेकिन इस अल्प अवधि के दौरान उन्होंने ऐसे सिद्धांत और सूत्र तैयार किए जो आज भी सुपर कंप्यूटर के युग में अपरिमेय हैं। उन्होंने अपने पीछे लगभग 4000 सूत्र और प्रमेय छोड़े। यह माना जाता है कि ये कुछ महान सिद्धांत की शुरुआत थी जो उनके वैचारिक स्तर पर थी जो उनके समय से पहले और असामयिक निधन के कारण विकसित होने में विफल रही। उनका व्यक्तिगत जीवन उनके प्रमेयों और सूत्रों की तरह रहस्यमयी था। रामानुजन गहन धार्मिक थे और गणित में आध्यात्मिकता पाते थे। उसके लिए शून्य निरपेक्ष वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता था। शोधकर्ता अभी भी गणित में उसकी उल्लेखनीय प्रतिभा के स्रोत को समझने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऐसा उनके बारे में माना जाता है कि वह रचनात्मकता की देवी के बहुत बड़े भक्त थे और देवी उसके सपनों में आने के बाद उन्होंने अपनी जुबान में फार्मूला डाल दिया।

रामानुजन पहले भारतीय थे जिन्हें लंदन की रॉयल सोसाइटी के लिए चुना गया था। रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर, 1887 को तमिलनाडु के इरोड में गरीब माता–पिता के यहां हुआ था। उनके पिता एक कपड़ा व्यापारी की दुकान में क्लर्क के रूप में कार्यरत थे। हालाँकि, उनकी माँ एक तेज बुद्धि की महिला थीं और ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ करने के लिए जानी जाती थीं।

उनके प्रारंभिक जीवन और स्कूली शिक्षा के बारे में बहुत कुछ ज्ञात नहीं है, सिवाय इसके कि वह स्वभाव से एकान्त बच्चे थे। ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म नामगिरि देवी की आराधना के परिणामस्वरूप हुआ था। बाद में रामानुजन ने अपनी गणितीय शक्ति को सृष्टि और ज्ञान की इस देवी को जिम्मेदार ठहराया। उसके लिए कुछ भी उपयोगी नहीं था जब तक कि वह आध्यात्मिकता का सार व्यक्त नहीं करता।

रामानुजन ने गणित को वास्तविकता के गहन प्रकटीकरण के रूप में पाया। वह इतने महान गणितज्ञ और प्रतिभाशाली थे, जो सभी विचारों और कल्पनाओं को पार कर जाते हैं। वे सपनों और ज्योतिष की व्याख्या के विशेषज्ञ थे। ये गुण उन्हें अपनी माँ से विरासत में मिले थे।

उनकी रुचि और गणित के प्रति समर्पण जुनून के बिंदु पर था। उसने बाकी सब को नजरअंदाज कर दिया और एक स्लेट पर और उसके दिमाग में दिन–रात नंबर के साथ खेलता रहा। एक दिन उनके पास जीएस कैर के "शुद्ध गणित का सिनोप्सिस" होने के लिए आया था, जिसमें बीजगणित, त्रिकोणमिति और कैलकुलस में 6,000 से अधिक सूत्र शामिल थे लेकिन कोई प्रमाण नहीं था।

रामानुजन ने इसे अपना निरंतर साथी बनाया और अपने दम पर इसे और बेहतर बनाया। गणित के प्रति उनके जुनून और पूर्वाग्रह ने उन्हें तीन प्रयासों के बावजूद अपनी इंटरमीडिएट परीक्षा पास नहीं करने दी। वह अन्य विषयों में न्यूनतम उत्तीर्ण अंक भी नहीं पा सका।

रामानुजन का विवाह नौ साल की एक लड़की से हुआ था, जिसके कारण उनकी पारिवारिक जिम्मेदारियों को और बढ़ा दिया। नेल्लोर के कलेक्टर की सिफारिश के साथ, जो अपने गणितीय प्रतिभा से बहुत प्रभावित थे, रामानुजन ने मद्रास फोर्ट ट्रस्ट में एक क्लर्क की नौकरी की। 1913 में वे प्रोफेसर हार्डी द्वारा लिखे गए उसकी दृष्टि में आए।

रामानुजन कैम्ब्रिज में चार साल तक रहे और इस अवधि के दौरान उन्होंने अपने गुरु प्रोफेसर हार्डी के सहयोग से महान गणितीय महत्व के कई पत्र तैयार किए। उनकी अभूतपूर्व और असाधारण प्रतिभा को अकादमिक दुनिया में मान्यता दी गई थी।

उन्हें 1918 में रॉयल सोसाइटी, लंदन का फेलो चुना गया था। वह उस समय 30 वर्ष के थे। गणित के कुछ क्षेत्रों में उनकी महारत वास्तव में शानदार और अविश्वसनीय थी। लेकिन जल्द ही उनकी कड़ी मेहनत उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करने लगी और अप्रैल, 1917 में वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए।

रामानुजन को क्षय रोग हो गया था और उसे कुछ समय के लिए भारत वापस भेजने का निर्णय लिया गया। वह 27 मार्च, 1919 को भारत पहुंचे। उन्होंने 26 अप्रैल, 1920 को कुंभकोणम में 32 वर्ष की आयु में अंतिम सांस ली। उनकी मृत्यु ने प्रोफेसर हार्डी और अन्य लोगों को शब्दों से परे कर दिया।

भारत में राष्ट्रीय गणित दिवस हर साल 22 दिसबंर को रामानुजन के जन्मदिन पर मनाया जाता है!!

शाश्वत बसु

आई० एस० ए० – एस०सी०ई०आर०टी०

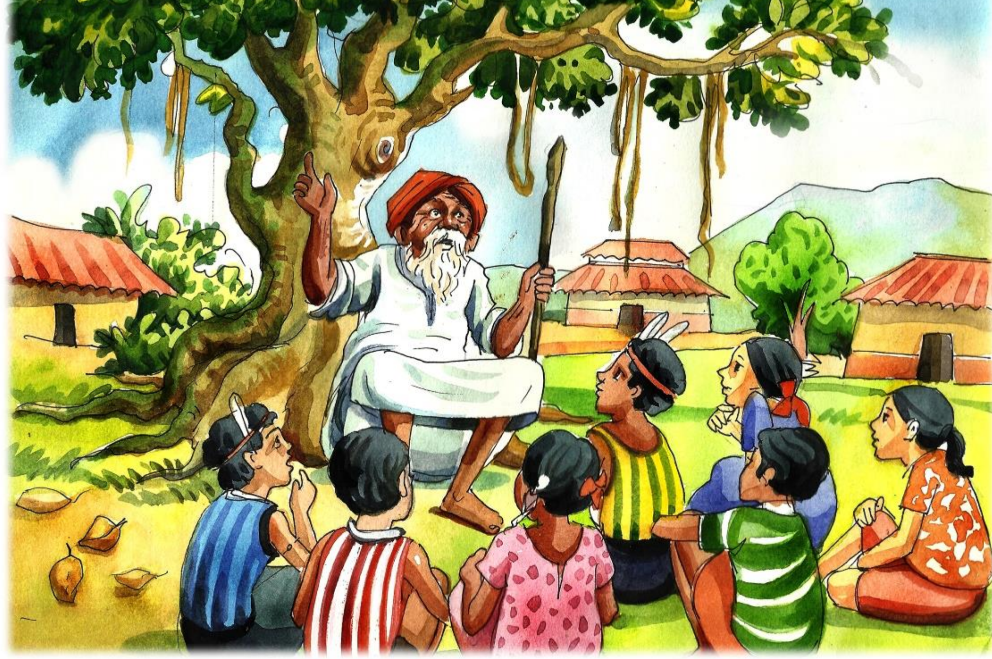

विद्यालय का सबसे अच्छा मित्र-
विद्यालय प्रबंधन समिति

भारतवर्ष में 6 से 14 साल के सारे बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिनियम (आर टी ई एक्ट) का लागू होना एक ऐतिहासिक कदम है। बच्चों के शिक्षण को लेकर यह अधिनियम सबसे सकारात्मक सोच पेश किया। इस के माध्यम से यह सुझाव दिया गया कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए जिन जिन चीजों की जरूरत हैं। वह शिक्षक अकेले प्रबंधन नहीं कर सकते हैं। विद्यालय एवं समाज को बच्चों के शिक्षण के अनुरूप तैयार करने के लिए बच्चों के माता पिता, अभिभावक, समुदाय के अन्य लोग एवं शिक्षक को मिलकर सोचना, योजना बनाना एवं सम्मिलित प्रयास करना चाहिए। तब ही विद्यालय के सारे बच्चों की शिक्षण एवं सर्वांगीण विकास संभव हो सकते हैं।

इस दिशा में हमारे देश में अनेक छोटे बड़े प्रयोग किये गए हैं। इस लेख में उन प्रयोगों से मिले सफलताओं को समेटकर एक सरल योजना बनाने के लिए कोशिश किया गया है। कुछ क़दमों के रूप में इसको बताया गया है ताकि एक विद्यालय के शिक्षक अपने विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ मिलकर इसको एक सम्भाव्य रास्ता के रूप में उपयोग करके अपने विद्यालय एवं समाज को अपने सारे बच्चों के लिए एक समृद्ध शिक्षण पीठ बना सकते हैं।

इसकी शुरुआत कहाँ से हो सकता है? आज भी हमारे ज्यादातर विद्यालयों में विद्यालय प्रबंधन समिति अलग अलग कारणों से अत्यंत सक्रिय नहीं है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम में बताया गया है कि विद्यालय प्रबंधन समिति विद्यालय के सारे बच्चों की शिक्षा के लिए एक सम्पूर्ण योजना बनाएगा। उपलब्ध नियम एवं संसाधन के अनुसार वह वित्तीय जरुरत का भी हिसाब करेंगे। SMC का प्रस्ताव के अनुसार जिला के अधिकारी सरकार से आर्थिक अनुदान की व्यवस्था करेंगे। आर्थिक सहायता मिलने के बाद SMC के सदस्य मिलकर सारे काम करेंगे एवं सारे बच्चों को आवश्यकता के अनुरूप सिखाएंगे।

नीचे इसके अनुसार ऐसे कुछ कदम आंके गए हैं। इनमे से हर कदम महत्वपूर्ण है क्रम से इनको लागू करने से बच्चों के शिक्षण में SMC एक प्रमुख भूमिका निभा पायेगी। आज की स्थिति को मद्दे नज़र करते हुए, इस काम को विद्यालय से ही शुरू करना होगा। नीचे दिए गए कदमों को अच्छी तरह से समझने के बाद विद्यालय के प्रधान अध्यापक एवं शिक्षक समुदाय के उपयुक्त सहभागियों को SMC के रूप में चुनेंगे एवं उनको अपने स्तर के समान सहयोगी के रूप में स्वागत करेंगे। वह सरल भाषा में प्रत्येक सहयोगी को इज्जत के साथ कैसे सोचना, योजना बनाना एवं मिलकर लक्ष्य की ओर चलने के लिए अनुरोध करेंगे। सारे कदमों पर अभी नज़र डालते हैं।

1. हमारे बच्चों के लिए विद्यालय का लक्ष्य:

विद्यालय के सारे शिक्षक एवं SMC के प्रत्येक सदस्य दृढ विश्वास करते हैं कि अपने सारे बच्चे अपनी जगह के सबसे बड़ी पूंजी एवं संभावना है। प्रत्येक बच्चा बहुमूल्य है। यह बच्चे जब अच्छी तरह सीख जायेंगे गाँव का भाग्य बदल जायेगा। गाँव के सारी समस्याएं भी सब के प्रयासों से दूर हो जायेंगे। इसका मूल मंत्र है – गांव/इलाका का प्रत्येक बच्चा सीखेगा। यही विद्यालय एवं इलाका का प्रमुख लक्ष्य है। प्रत्येक शिक्षक एवं SMC सदस्य का प्रमुख लक्ष्य यह ही है। इस लक्ष्य को बड़े बड़े अक्षर में विद्यालय एवं इलाका के अलग अलग जगह में लिखना जरूरी है । घर घर में भी इसको लिखना चाहिए ताकि प्रत्येक शिक्षक एवं माता पिता इसको अपना प्रमुख लक्ष्य के रूप में स्वीकार कर लेंगे एवं मिलजुल कर प्रयास करने के लिए तैयार होंगे। इसके साथ यह भी जानना जरूरी है की प्रत्येक बच्चा सीख सकता है और सीखेगा भी।

2. सारे बच्चों के शिक्षण के लिए क्या क्या चाहिए?

शिक्षा का अधिकार अधिनियम में लक्ष्य रखा गया है कि प्रत्येक बच्चा हर दिन विद्यालय आएगा। उसको बालकेन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया से भाषा, गणित, विज्ञान अदि विषय के अतिरिक्त खेलकूद, संगीत, नाटक, कला, चित्र, आदि भी सिखाया जायेगा। इसमें से प्रत्येक विभाग बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत जरूरी है। सारे विषयों को

सीखना प्रत्येक बच्चा के लिए अनिवार्य है। प्रारंभिक दिनों में सारे बच्चों को खेलकूद, कला, चित्र, संगीत, आदि से परिचित कराना भी जरूरी है।

भाषा सीखने के लिए विद्यालय में अच्छा पुस्तकालय, बच्चों के लिए उम्र अनुरूप रुचिकर पाठ्य सामग्री चाहिए जो कि प्रत्येक बच्चा को मिल सकता है। गणित सीखने के लिए विद्यालय में गिनने, जोड़ने, भाग करने, माप, एवं अन्य अवधारणाओं को समझने के लिए ढेर सारे सामग्री एवं पाठ्य सामग्री चाहिए ।विज्ञान सीखने के लिए खोज, संग्रह, संकलन, चर्चा, अवलोकन, अध्ययन, विश्लेषण, प्रदर्शन, अदि गतिविधियों के लिए ढेर सामग्री एवं पाठ्य सामग्री चाहिए ।सामाजिक विज्ञान के लिए खोज, तथ्य संग्रह, अध्ययन, विश्लेषण, चर्चा, संकलन, आदि के लिए अनेक सामग्री एवं पाठ्य सामग्री चाहिए।

खेलकूद के लिए बच्चों को पर्याप्त जगह, विविध खेल सामग्री, शिक्षक, समूह, समय, अदि चाहिए ।नियमित अभ्यास के अतिरिक्त प्रतियोगिता, पुरस्कार एवं अधिक से अधिक मौके चाहिए ।चित्रांकन के लिए कागज, कपडा, रंग, कला शिक्षक, जगह, समय एवं पाठ्य सामग्री चाहिए ।संगीत के लिए वाद्य यन्त्र, संगीत शिक्षक, स्थान, समय, अभ्यास एवं पाठ्य सामग्री चाहिए।

सारे विषय सीखना प्रत्येक बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है ।विद्यालय के शिक्षक एवं SMC के सदस्य मिलकर इन प्रत्येक चीज के बारे में सोचना, एवं तैयारी करना अनिवार्य है। इस योजना में ऐसी कोई काम नहीं है जो किसी विद्यालय में नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक स्थान में यह सारे काम ज्यादा कम होते रहते हैं। प्रत्येक समूह अपने ढंग से यह सारे काम करते रहते हैं। उन स्थानीय प्रयोगों, दक्षता एवं संसाधनों को विद्यालय के साथ जोड़ने से सारे बच्चों को सीखने के लिए समृद्ध शिक्षण स्थल बन जाता है। इतना समझना जरूरी होता है कि एक जगह का शिक्षण स्थल दूसरी जगह की शिक्षण स्थल से अलग होता है एवं दोनों स्थानीय बच्चों के लिए समरूप से शिक्षण उपयोगी होते हैं।

3. विद्यालय के शिक्षण सहयोगी तालिका:

सामग्री संसाधन के अतिरिक्त लोक संसाधन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है ।जैसे, संगीत सिखाने के लिए स्थानीय गीतकार, वाद्यकार, नाट्यकार, आदि बच्चों के लिए एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं ।वह निरंतर विद्यालय आएंगे एवं बच्चों को संगीत सिखाएंगे। ऐसे ही

स्थानीय खिलाडी खेलने में, चित्रकार चित्र सिखाने में, खाना पकानेवाले बच्चों का पोषण में, किसान खेती सिखाने में, स्वास्थ्य कर्मी स्वास्थ्य यत्न में, स्वच्छता कर्मी स्वच्छता सिखाने में एवं सुरक्षाकर्मी बच्चों का सुरक्षा में मदद कर पाएंगे।

इन चीजों को जितना अच्छी तरह से सोचा जायेगा और आंका जायेगा, विद्यालय के शिक्षक समुदाय के संसाधनों को उतने पसंद करेंगे एवं स्वागत भी करेंगे। सब लोग मिलकर प्रत्येक विषय में बच्चों को सिखाने के लिए संसाधन कर्मी एवं सामग्री संसाधनों का तालिका बनाएंगे। प्रत्येक स्थान के आसपास में अलग अलग विषयों से सम्बंधित अनेक अनुष्ठान भी होते हैं। जैसे, स्वास्थ्य से संबधित डाक्टर और नर्स, स्वच्छता से सम्बंधित स्वच्छता विभाग, पानी विभाग, अदि, खेल से सम्बंधित खेल विभाग, भाषा, नाच, गीत, आदि से सम्बंधित संस्कृति विभाग, विज्ञान से सम्बंधित मिट्टी, पानी, कृषि, मौसम, विभाग, आदि। इन विभागों के मदद से बच्चे अनेक कुछ सीख सकते हैं एवं अपने जीवन में काम में लगा सकते हैं।

4. विद्यालय का अकादमिक कैलेन्डर:

विषय वार अलग अलग संसाधनों की तालिका बनाई जायेगी। इसके साथ कौन कब किस काम के लिए विद्यालय से जुड़ेंगे, उसको भी तालिका में जोड़ा जा सकता है। विद्यालय के पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तक के शिक्षण बिन्दु के अनुसार एक शिक्षण या अकादमिक कैलेन्डर बनाया जा सकता है विद्यालय के बच्चों के लिए। इसको लागू करने के लिए SMC सदस्यों के साथ योजना भी बनाया जा सकता है। इस में प्रति सप्ताह अलग अलग विषयों के लिए कौन, कब, कहाँ आएंगे एवं किस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को सिखाएंगे वह लिपिबद्ध रहेगा। यह सुचना एवं शिक्षण बिन्दुओं को उस संसाधन व्यक्ति को पहले से ही बताया जायेगा ताकि वह स–समय विद्यालय आएं एवं बच्चों के सीखने में मदद करें। यह योजना बनाने के समय बच्चों को भी शामिल किया जायेगा एवं आकादमिक कैलेन्डर को कक्षा में टांगा जायेगा।

5. शिक्षण के लिए सामूहिक तैयारी:

प्रत्येक काम की तैयारी में काफी समय लगता है। खेल का मैदान बनाना, प्रत्येक संसाधन व्यक्ति को खोजना, जोड़ना; संगीत की सामग्रियां की व्यवस्था करना, पुस्तकालय के लिए सही पुस्तक चयन करना एवं व्यवस्था करना। विज्ञान एवं गणित शिक्षण सामग्रियां व्यवस्था करना या बनाना, स्वास्थ्य किट बनाना, स्वच्छता किट व्यवस्था करना, विद्यालय में विषय वार प्रयोगशाला बनाना, आदि हर काम के लिए एक विस्तृत योजना बनाना होता है ।सम्बंधित सारे सामग्रियों को इकट्ठा करना होता है। संसाधन व्यक्ति विशेषों को खोजकर संपर्क एवं सहमति बनाना होता है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक काम के लिए सही जगह चुनकर सारे सामग्रियों को व्यवस्थित रूप से रखना होता है ताकि

जरूरत के समय सारे सामान मिल पाये एवं ठीक से व्यवहार हो पाएं। यह भी सारे सम्पर्कित व्यक्ति साथी शिक्षक, समुदाय के सहयोगी एवं बच्चों को पता होना जरूरी होता है।

6. शिक्षण के लिए खर्चा खाता:

जरुरत के अनुसार सारे काम करने के लिए जितना आर्थिक अनुदान चाहिए, वह विभाग से पूरी मात्रा में मिल नहीं पाता है। इसीलिए सक्रीय SMC विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर कुछ अलग योजना बनाते हैं। उनका लक्ष्य स्पष्ट होता है – विद्यालय का प्रत्येक बच्चा को सिखाना। यह करने के लिए जो कुछ भी चाहिए, वह सारे काम कराने के लिए तैयारी करते हैं। कुछ सहयोग शिक्षा विभाग से मिलता है आर्थिक अनुदान के रूप में वह पर्याप्त नहीं होता है। इसीलिए SMC के सदस्य वैकल्पिक तरीकों से योजना बनाते हैं। वह स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्ति, धनी व्यक्ति, स्वयंसेवी संस्था, व्यवसायी संगठन, पुराने छात्र छात्राएं, आदि के माध्यम से भी राशि या सामग्री सहायता इकट्ठा करते हैं।

राशि के अतिरिक्त, बच्चों की शिक्षण में अनेक सामग्री एवं संसाधन व्यक्तियों की जरुरत होती है। SMC सदस्य यह सब भी हिसाब करते हैं। एक विस्तृत तालिका बनने के बाद काम को बाँटकर वह सारा लक्ष्य हासिल करने में लग जाते हैं। इस प्रकार के योजना बनाने में एवं इसको लागू करने में SMC सदस्य चमत्कारिक भूमिका निभाते हैं। विद्यालय में इस काम को जितना खुलापन के साथ किया जाता है, बच्चों के लिए सारी तैयारी एवं सारे काम उतने ही अच्छी तरह से हो पाते हैं।

7. बच्चों के अभ्यास में सामूहिक सहयोग:

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन में शिक्षण के लिए खुद को काफी व्यक्तिगत संघर्ष करना पड़ता है। कभी खुद अवलोकन कर, दिए हुए सूचना को अनुसरण कर, खुद अभ्यास कर, कभी दूसरों के साथ या समूह में मिलकर, कभी बार बार अभ्यास कर, ऐसे विभिन्न तरीके से सीखना होता है। सही ढंग से सीखने से शिक्षण व्यवस्थित एवं सटीक हो पाता है। अनुभवी वयस्क इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण सहयोग एवं समर्थन दे पाते हैं।

यह भी शोध से प्रमाणित है कि बच्चे उपयुक्त शिक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेकर सीखते हैं। गतिविधि जितनी रोचक होती हैं एवं सीखने में मदद करते हैं बच्चे उतने ही उत्साह से उन गतिविधियों में भाग लेते हैं

।शिक्षण गतिविधियाँ बच्चों के चाह एवं रूचि के अनुसार होने से बच्चे आग्रह से भाग लेते हैं। गतिविधियों के संचालन के समय शिक्षक एवं समुदाय संसाधन व्यक्ति को इस पर ध्यान देने की जरूरत रहती है कि सारे बच्चे सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। नहीं तो गतिविधि में परिवर्तन या विकल्प ढूंढ़ना जरूरी होता हैं।

गतिविधि संचालन के समय अनुभवी लोग शिक्षार्थियों का बेहतर मदद कर पाते हैं। जैसे गाने वाले लोग गीत गाना सिखा पाते हैं; नाचनेवाले नाच सिखा पाते हैं; या खिलाडी खेल, या, किसान खेती का काम। हर समय अनुभवी लोगों की मदद से शिक्षण प्रक्रियाओं को समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। SMC के लोग अलग अलग विषयों में अनुभव लेकर आते हैं। विद्यालय के शिक्षक को उनको अनुभवी साथी एवं महत्वपूर्ण शिक्षा सहायक के रूप में सहयोग करने का तरीका सिखाना अति जरूरी है। इस मानसिकता का अभाव ही विद्यालय में SMC सदस्यों की सक्रिय भागीदारी से दूर रखता है। फलतः बच्चे सीखने से वंचित हो जाते हैं। शिक्षकों के पास इस प्रकार का स्थानीय एवं कामगार अनुभव नहीं होते हैं। इसके बिना शिक्षा एवं शिक्षण अपूर्ण रह जाते हैं।

8. बच्चों का शिक्षण का दिशा:

विद्यालय का लक्ष्य है – प्रत्येक बच्चा लक्ष्य के अनुसार सीखेगा। इसीलिए विद्यालय में प्रत्येक बच्चों की सक्रिय भागीदारी के लिए तैयारी की जाती है। यह महत्वपूर्ण है, कि प्रत्येक बच्चा गतिविधियों में कितना भाग लेता है एवं कितना सीखता है। इसीलिए विद्यालय में शिक्षण का निरंतर एवं सम्पूर्ण आकलन किये जाते हैं। जो जो लोग बच्चों की शिक्षण में मदद करते हैं, उन सारे लोगों से शिक्षण के बारे में जानकारी लेने के लिए, प्रपत्र बनाये जाते हैं, चर्चा की जाती है एवं परामर्श किया जाता है। यह सुझाव बच्चों के लिए अत्यंत मूल्यवान होते हैं ।इसका विश्लेषण करके शिक्षक अपने बच्चों के बारे में एवं कक्षा के भविष्यत् योजना बना पाते हैं। आगे किस किस से क्या और कैसे सहयोग लेंगे वह भी तैयार कर पाते हैं।

यह कक्षा के शिक्षण की दिशा को लक्ष्य की और चलाये रखने में मदद करता है ।यह जितना व्यापक एवं निरंतर होता है, बच्चों का शिक्षण भी उतना ही व्यवस्थित और निरंतर होते रहते हैं। SMC सदस्य इस प्रक्रिया से जितना जुड़ेंगे, वह विद्यालय की प्राथमिकताओं को उतने अच्छे समझ पाएंगे। उसके साथ वह अपनी सक्रिय सहयोग के माध्यम से प्रत्येक बच्चों के शिक्षण में भी मदद कर पाएंगे। उनके सहयोग के बिना कोई शिक्षक के लिए प्रत्येक बच्चा को उनका शिक्षण लक्ष्य तक पहुँचाना संभव नहीं है।

इस प्रक्रिया में विद्यालय का बाल संसद एक बड़ी भूमिका निभा सकती है। इसकी शिक्षा मंत्री, एवं अन्य मंत्री भी बच्चों के बारे में महत्वपूर्ण सूचना एवं सुझाव दे सकते हैं। बच्चों के सूचना एवं सुझाव सबसे वास्तविक होते हैं, क्योंकि बच्चे मिलजुलकर सबसे ज्यादा समय बिताते हैं एवं एक दूसरों को बेहतर समझते हैं ।

9. प्रत्येक दिन एक शिक्षण उत्सव:

समुदाय सक्रिय बनने से विद्यालय का प्रबंधन एवं नियमित संचालन के लिए समुदाय के कोई ना कोई सदस्य नियमित विद्यालय आते हैं एवं सहयोग करते हैं। उनके सहयोग से विद्यालय में अनेक रोचक शिक्षण गतिविधि संचालित होते हैं। अपने प्रिय लोगों के साथ काम करना बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। वह अधिक सक्रिय होकर गतिविधियों में भाग लेते हैं, खुश होते हैं एवं सीखते चलते हैं। समुदाय के लोग भी उतने उत्साह के साथ सारे बच्चों का मदद करने में लग जाते हैं। किसी को पीछे छोड़ना नहीं चाहते हैं। यही मानसिकता एवं सहभागिता प्रत्येक बच्चा की शिक्षण के लिए सबसे अच्छा माहौल बना लेता है।

इसके साथ प्रत्येक गतिविधि भी बच्चों के लिए अत्यंत रोचक बन जाती है। धीरे धीरे शिक्षक समझने लगते हैं कि समुदाय के लोगों के पास अनेक

अनुभव होते हैं जो बच्चों की किताबी शिक्षण से ज्यादा समृद्ध एवं उपयोगी है। जैसे, किताब में पेड़पौधों के बारे में चित्र देखकर पढ़ना एवं पर्यावरण/खेत में घूमकर उनका अध्ययन करना। अपने अकादमिक कैलेन्डर में वह क्रमशः परिवेश एवं समुदाय आधारित अनेक नयी गतिविधियों को जोड़ते चलते हैं; जैसे, गांव में दशहरा पर्व, मेला, बाजार, अदि। फलतः, शिक्षण गतिविधियाँ केवल विद्यालय में नहीं; समुदाय एवं पर्यावरण आधारित होने लगते हैं। इस में विद्यालय के शिक्षक के साथ समुदाय के अनुभवी लोग अधिक मदद करने लगते हैं। प्रत्येक गतिविधि इतने रोचक एवं जीवंत बन जाती है। वह एक उत्सव जैसे माहौल बना लेते हैं। शिक्षक एवं बच्चे अत्यंत खुशी एवं उत्साह के साथ इसमें भाग लेते हैं एवं सीखते रहते हैं।

10. समुदाय से आदर एवं पुरस्कारः

समुदाय के लोगों के लिए इस से अच्छा अवसर और क्या हो सकते हैं? वह महसूस करते हैं, विद्यालय उनका है, जहाँ शिक्षक उनका इज़्ज़त करते हैं, उनसे परामर्श करते हैं; गतिविधियों में इज़्ज़त के साथ उनको शामिल करते हैं एवं सबसे बड़ी उपलब्धि होती है, उनका प्रत्येक बच्चा का खुशी से सीखना एवं सक्रियता से गतिविधियों में भाग लेना। वह अपने आप शिक्षकों का इज़्ज़त करने लगते हैं एवं प्रत्येक बच्चा का आदर करने चलते हैं। अलग अलग समय में बच्चों को गाँव की सांस्कृतिक, सामाजिक, एवं शैक्षणिक गतिविधियों में भाग दिलाना, उनका प्रयास का आदर करना एवं समय समय पर उनको पुरस्कार देने से भी चूकते नहीं। बचपन की इन छोटी सफलताएं एवं समुदाय से शाबासी, उनके जीवन में शानदार पूंजी और प्रेरणा बन जाते हैं।

11. विद्यालय में समग्र परिवर्तनः

धीरे धीरे विद्यालय में अनेक विराट परिवर्तन आने लगते हैं। प्रधान शिक्षक एवं सारे कर्मी समुदाय के आदर से अधिक प्रेरित होते हैं। वह समय पर आने लगते हैं, प्रत्येक बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ज्यादा ध्यान देते हैं, विद्यालय के परिसर को बच्चों के लिए अधिक आकर्षक बनाते हैं। विद्यालय का पुस्तकालय, विज्ञान/गणित प्रयोगशाला को अधिक समृद्ध करते हैं, शौचालयों को अधिक उपयोगी बनाते हैं, समुदाय के सदस्यों का इज़्ज़त करते हैं, इत्यादि।

12. शिक्षण का प्रसार एवं प्रचारः

मानसिकता बदलने से परिवर्तन भी निरंतर एवं व्यापक होते चलते हैं। समुदाय एक तरह से विद्यालय एवं प्रत्येक बच्चों के शिक्षण को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। दूसरी और वह विद्यालय का अनुभवों को दूसरों के पास पहुँचाने में भी मदद करते हैं। स्थानीय विधायक, अधिकारी, मीडिया कर्मी आदिं के माध्यम से वह अपने विद्यालय के लिए अधिक संसाधन की व्यवस्था करते हैं। अख़बार, पत्रिका, अदि के माध्यम से विद्यालय के परिवर्तनों को दूसरों तक पहुंचाते हैं।

बच्चों की शिक्षण को क्रियान्वित करने के लिए विज्ञान, गणित, भाषा, सामाजिक विज्ञान खेलकूद, नाच, गीत, चित्रकला, आदि विषय के अनुभवी लोगों से बच्चों को मिलाते हैं। अलग जगहों में आयोजित सेमिनार, प्रदर्शनी, मेला, उत्सव, प्रतियोगिता, अदि में भाग दिलाने के लिए बच्चों को पहुंचाते हैं। अपने विद्यालय में भी इस प्रकार की गतिविधियां आयोजन कराते हैं एवं दूसरे विद्यालय के बच्चों से अपने बच्चों के अनुभव साझा करने के लिए रास्ता खोजते हैं।

13. व्यवस्था पर सकारात्मक प्रभावः

एक विद्यालय के परिवर्तन दूसरे विद्यालयों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। उन विद्यालय के शिक्षक, समुदाय सदस्य, आदि इस विद्यालय से सीखते हैं एवं अपने विद्यालयों को भी बेहतर बनाने के लिए सपने देखते हैं, योजना बनाते हैं एवं कमर कसते हैं। इस विद्यालय से सम्बंधित CRC, BRC, DIET, आदि के सदस्य भी इस विद्यालय की सफलताओं को विभाग के दूसरों तक पहुंचाते हैं। व्यवस्था के दूसरे शिक्षा कर्मी इस प्रयोग को एक सफल एवं उपयोगी नमूना के रूप में इसका आदर करते हैं एवं विभाग के सब के पास पहुंचाते हैं। शोधकर्ता भी इस पर

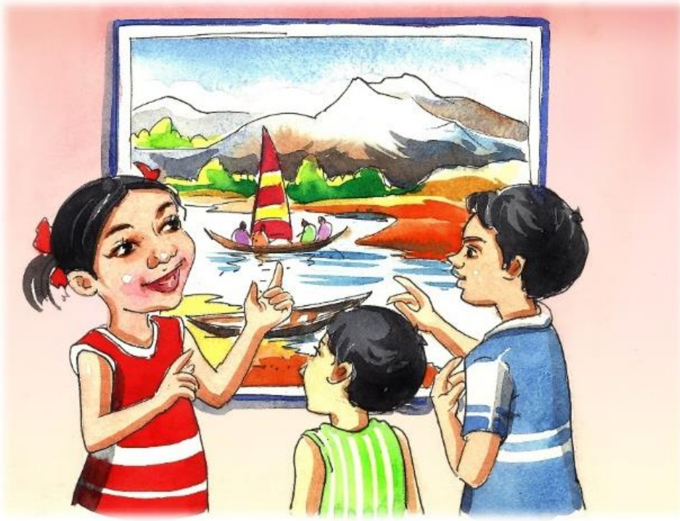

अध्ययन करना पसंद करते हैं एवं इसके सफलता की राज को सब के पास पहुँचाने का काम करते हैं। इस पर दस्तावेज, पुस्तक, लेख, सिनेमा, आदि भी बनते हैं।

सफलता के फल सब को अच्छे लगते हैं। प्रयोगों के परिणाम काफी शैक्षणीय होते हैं। समुदाय आधारित इस प्रयोग की झलकियां ओडिशा एवं झारखण्ड के मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (MLE) कार्यक्रम, नागालैंड का समुदायकरण (communitization), लद्दाख में सेकमॉल संस्था का शिक्षा आंदोलन, आसाम, केरला, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, आदि राज्य के कुछ विद्यालयों में देखा जा सकता है। याद रखना जरूरी है कि समुदाय सहभागिता का उद्देश्य समझना बहुत महत्वपूर्ण होता है। अपने जरूरत के हिसाब से समुदाय के कुछ लोगों को विद्यालय के कुछ काम में लगा देना एक स्वस्थ परंपरा नहीं है। समुदाय के पास उपलब्ध अनुभव एवं दक्षताओं को बच्चों की शिक्षण के परिपेक्ष्य में समझना, समुदाय के सहभागियों का आदर करना एवं एक समान साथी के रूप में समुदाय के सदस्यों को विद्यालय में सहयोग के लिए स्वागत करना अत्यंत गुरुत्वपूर्ण है। इस लेख उस दिशा की और इंगित करता है कि यदि समुदाय साकारात्मक विचारों के साथ विद्यालय के विकास और गुणवत्ता शिक्षा एवं शिक्षण की ओर लग जाए तो बच्चों में सर्वांगीण विकास होगा और एक मजबूत राष्ट्र बनने में देर नही लगेगा।

रचनाः **विनय पट्टनायक**, टीम लीडर, *ISA-SCERT, बिहार*

एक शिक्षक को क्लास के लिए क्या-क्या करना चाहिए? या

एक शिक्षक के द्वारा कक्षा कक्ष का प्रबंधन किस तरह होना चाहिए?

एक वर्ग को अच्छा और आदर्श वर्ग बनाने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए....

1. कक्षा में बच्चों को उनकी ऊंचाई के अनुसार बैठाना चाहिए अर्थात कम ऊंचाई वाले बच्चों को आगे और अधिक ऊंचाई वाले बच्चों को पीछे बैठाने चाहिए।
2. कभी–कभी बच्चों को rotrate भी करना चाहिए अर्थात यदि कोई बच्चा आज आगे बैठा है तो, उसे कभी बीच में या जो बच्चा पीछे रहता है तो, कभी उसे आगे में भी बैठाना चाहिए।
3. शिक्षक को कमजोर बच्चों या कम जाने वाले बच्चों पर भी उतना ही ध्यान देना चाहिए जितना अधिक जानने वाले बच्चों पर।
4. कक्षा में शरारती बच्चे या बदमाशी करने वाले बच्चे या जो बच्चे पढ़ने वाले नहीं हैं उनको शिक्षक के द्वारा गृह कार्य जरूर दिया जाना चाहिए या कक्षा में बैठने पर उससे सवाल के घेरे में रखना चाहिए ताकि उनका ध्यान पढ़ाई में लगा रहे।
5. बच्चे यदि गृह कार्य नहीं करते तो शिक्षक को उन्हें पीटना या डांटना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें वास्तव में पढ़ाई का महत्व बताने की कोशिश करना चाहिए।
6. जो बच्चे कक्षा में कम ध्यान देते हैं या उद्दंडता पर अधिक ध्यान देते हैं उन्हें भविष्य में आने वाली परेशानियों या कठिनाइयों के बारे में बताना चाहिए ताकि वह कक्षा में बैठकर अच्छे से पढ़ लिख कर के जिंदगी में खुशहाल बने।
7. एक शिक्षक को कक्षा में विद्यार्थियों के साथ नम्रता दयालुता और मानवता के साथ व्यवहार करना चाहिए।
8. शिक्षक जब भी कक्षा में पढ़ाएं, बच्चों को जरूर प्रोत्साहित करें।
9. शिक्षक कक्षा में जो भी पाठ पढ़ाते हैं पाठ पढ़ाते वक्त बच्चों को आसान उदाहरण दें और उस पाठ को सहज ढंग से बताने का प्रयास करें ताकि बच्चे अच्छी तरह आसानी से समझ जाएं।
10. शिक्षक कक्षा में घूम घूम कर यह देखने का प्रयास करें कि कौन बच्चा लिख रहा है कौन बच्चा नहीं?
11. जो बच्चे लिखने में असमर्थ हैं या लिखने में कठिनाई आती है या अशुद्ध लिखते हैं उन्हें बताकर उन्हें गृह कार्य जरूर दें।
12. कक्षा में बच्चों को लगातार नहीं पढ़ाना चाहिए शिक्षक को यह चाहिए कि वह कभी–कभी बच्चों का मनोरंजन भी करें।
13. कक्षा में लीडरशिप की क्वालिटी के लिए या असेंबली में तेज विद्यार्थियों के साथ–साथ कमजोर बच्चों को भी मौका दें एवं सामंजस्य स्थापित करें ताकि उनके बीच में भेदभाव ना रहे।
14. विद्यालय के किसी कार्यक्रम में या कक्षा के किसी कार्यक्रम में सभी बच्चों को समान मौका दें।
15. विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम या भाषण प्रतियोगिता या वाद–विवाद प्रतियोगिता में बच्चों के कौशल को देखें और उन्हें प्रोत्साहित करें।
16. कभी–कभी साधारण बच्चों को टॉपर्स के साथ भी बैठाना चाहिए।
17. शिक्षक को खुद अनुशासित होना चाहिए।
18. कमजोर बच्चों को कुछ उत्तरदायित्व दे देना चाहिए।
19. शिक्षक को सप्ताह में एक बार बच्चों का ड्रेस बच्चों के नाखून और बच्चों की कॉपी जरूर जांच करनी चाहिए.
20. कक्षा हवादार एवं शांत होना चाहिए।
21. किसी छात्र या छात्रा को किसी भी तरह की समस्या होती है तो उनकी समस्या सबके सामने नहीं बल्कि एकांत में जाकर उनकी समस्या सुननी चाहिए।

श्री सुनील कुमार,
स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक,
आर. के. के. राजकीय बुनियादी विद्यालय,
पटना सिटी, पटना

बच्चे की गरिमा

बच्चे के संबंध मे मान्यताएँ लगातार बदलती रही है। पहले जहां बच्चों को कोरा स्लेट, माटी का लोंदा समझा जाता था, यह माना जाता था कि बच्चों को जो सिखाना चाहेंगे वह सीखेगा, जैसा बनाना चाहेंगे वह बन जाएगा। समाजीकरण की प्रक्रिया मे बच्चे के स्वतंत्र अस्तित्व की कल्पना ही नहीं थी। यह वयस्कों के नियंत्रण मे संचालित होता था। अनुशासन के नाम पर बच्चे की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, उनकी कौतूहलता हमेशा उपेक्षित की जाती रही। दर्शनिकों के विचार भी अलग अलग रहे। जहां कोई दार्शनिक कोरी स्लेट मनाने के पक्ष मे थे वही रूसो पहली बार अपनी पुस्तक 'एमाइल' में प्रश्न करते है—'आखिर वह कौन–सी अवस्था है जिसकी सामान्य गतिविधियाँ करुणा और परोपकार से भी बढ़कर हैं?' उत्तर वह स्वयं देते है—'बचपन!' अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वह लिखते है—'बचपन को प्यार करो. उसके साथ खेल खेलो. उसके सुखामोद में शामिल होकर उसकी मनोरम प्रकृति में डूब जाओ, बचपन के आनंदमय दिनों को छीनो मत, ये बहुत जल्दी गुजर जाने वाले हैं.' रूसो ने 'एमाइल' में लिखा—'बच्चे निर्दोष जन्मते हैं, बाद में समाज उन्हें बिगाड़ देता है. ' रूसो की एक और मान्यता थी कि बच्चे पढ़ने के बजाय अनुभवों से गुजरते हुए सीखते हैं।

इस प्रकार दार्शनिको के विभिन्न मत से गुजरते हुए विज्ञान के विकास ने काफी गुत्थी सुलझाने की कोशिश की। मनोवैज्ञानिकों ने बच्चे और बचपन को एक नया आयाम दिया। मारिया मांटेसरी ने अपनी पुस्तक 'ग्रहणशील मन' में कहा है – "हजारो वर्षो से बच्चो की असली रचनात्मक शक्ति पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है,जबकि यह शक्ति बड़ी प्रभावशाली है। जैसे, पहले मनुष्य ने धरती पर चलना शुरू किया, बाद मे खेती के लिए उसे जोता, परंतु धरती के गर्भ मे कितना अथाह खजाना भरा पड़ा है इस पर उसने विचार नहीं किया। इसी तरह आज मनुष्य सभ्यता की ओर प्रगति करता चला जा रहा है पर उसका ध्यान इस पर नहीं जाता है कि बच्चों के अंदर मानसिक शक्तियों का कितना भंडार है"। कैरेल ने लिखा है, बचपन का समय सबसे मूल्यवान है। शिक्षा द्वारा इसका हर संभावित तरीके से उपयोग होना चाहिए। जीवन के इन वर्षो की बर्बादी,बाद मे कभी पूरी नहीं की जा सकती। अतः बचपन के वर्षों की अवहेलना न करके हमे बड़ी सावधानी से उनपर ध्यान देना चाहिए।[1]

बच्चा एक सम्पूर्ण मानव है। मानव का सच्चा स्वरूप यह है कि उसमे स्वतंत्र विकास की क्षमता है। जैसे ही उसपर से मानसिक दबाब हट जाता है, जो उसकी क्षमता को सीमित किए रहता है तथा उसके उत्साह को दबाता है, वैसे ही उसकी महानता प्रकट होने लगती है।[2]

अर्थात जब बच्चा एक सम्पूर्ण मानव है तो स्वाभाविक रूप से एक मनुष्य को जितने अधिकार हैं वह सभी अधिकार एक बच्चे के पास भी है। यह सही है कि मनुष्य को प्रत्येक चीजें सीखनी पड़ती है। पर यह सीखने की प्रक्रिया भय और उपेक्षा के माहौल मे संभव नहीं है। उनके विकास के लिए उनकी स्वतन्त्रता का आदर महत्वपूर्ण है। सीखना हमेशा उन्मुक्त वातावरण की मांग करता है। यह वातावरण बड़ों के द्वारा निर्मित किए जाते हैं। अगर यह वातावरण उन्मुक्तता का निषेध करे तो कोई भी अपने अनुभव को विस्तार नहीं दे पता है। संकोच और भय उसे नवाचार की ओर उन्मुख नहीं करते। जहाँ वह अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर पाता वहाँ उसे टिके रहने मे ग्लानि महसूस होती है। चाहे वह बड़ा हो या बच्चा। जहां उसके विचारों को जगह मिलती है उसे सुना जाता है, बराबरी का बोध होता है वहाँ गौरवान्वित महसूस करता है। वहाँ उसे कुछ भी करने कहने मे संकोच नहीं होता। अपनी प्रतिक्रिया देता है।

जब हम यह मानते हैं कि बच्चा भी एक चेतनशील प्राणी है तो उसकी अपनी चेतना भी सम्मान की उम्मीद तो करेगी। बड़े और बच्चे मे सिर्फ अनुभव के अंतर होते हैं। इस प्रकार बच्चे को भी एक व्यक्ति के मौलिक अधिकार मिलने चाहिए। बच्चे बड़ों से अपनी सुरक्षा की अपेक्षा रखता है। यह भी अपेक्षा रखता है कि हमे दुनियाँ को समझने मे हमारे बड़े हमे मदद करेंगे।

इसी क्रम मे संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 20 नवम्बर 1989 को बच्चे के अधिकार मे प्रस्ताव पारित किए गए जिसमे बच्चे को समाज मे एक विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ जीने के लिए तैयार किया जाना चाहिए।

आइये बच्चों के लिए एक सुखद संसार बनाएँ।

नलिन कुमार मिश्रा
सी0पी0डी0 लीड,
आई0एस0ए–एस0सी0ई0आर0टी0

---

[1] ग्रहणशील मन – पेज 2-

[2] ग्रहणशील मन – पेज 5

Teaching English as
Second Language

– Third stage –

Second stage में Noun, Verb, Adjective, Article और Adverb को cover कर लेने के बाद आगे की गतिविधियाँ इस प्रकार की जानी चाहिए :

Practice of common phrases :

English सिखाने का एक अच्छा तरीका यह है कि learners को common phrases के use की practice करने की गतिविधि करवाई जाय :

- इन phrases को learner को repeat करवाया जाय जबतक कि वह इसका reading और writing में use करने में खुद को comfortable न महसूस करे
- कुछ common phrases जैसे "never mind", "no doubt", "make believe" "by the way" etc.
- Learners को common phrase की एक list दी जाय जिसे वह समझें और उसपर कार्य करें।

Teach basic sentence construction :

Second stage तक learner को अच्छी–खासी vocabolary का ज्ञान हो जाता है और साथ ही उन्हें noun, verb, Adjective, adverb आदि में अंतर समझ में आ जाता है इसलिए उन्हें अब basic sentence construction सिखाया जाए और उसकी भरपूर practice कराई जाए। यह इस लिए भी ज़रूरी है की इससे उनकी wrtiting abilility को आधार मिलेगा और साथ–साथ अपनी reading को develop करने में पूरी मदद मिलेगी।

इस स्तर पर उन्हें वह मुख्य five patterns सिखाए जाएँ जिसके हिसाब से English के sentence का निर्माण होता है:

1. Subject & Verb sentence S + V

   इस sentence में subject के बाद एक verb होता है, for example – "Sonu reads".
2. Subject & Verb – Object sentence S + V + O

   इस sentence में पहले subject फिर verb होता है और उसके बाद Object होता है', for example – "Zoya eats papaya".
3. Subject & Verb – Adjective sentence S + V + Adj

   ऐसे sentences में पहले subject फिर verb और उसके बाद adjective होता है' for example – "The baby is cute".
4. Subject & Verb & Adverb sentence S + V + Adverb

   इन sentences में पहले subject फिर verb और उसके बाद adverb होता है for example – "Hema runs quickly".
5. Subject & Verb + Noun sentence S + V + Noun

   इस तरह के sentence में पहले subject उसके बाद verb और उसके बाद noun होता है, for example – "Mona is a doctor".

इन पाँचों पैटर्न को सिखाने के बाद फिर इनका "Negative sentence" और "Interogative Sentence" सिखाकर उसकी practice कराई जाए।

इसी के साथ Subject – Verb agreement सिखाने और practice कराने की आवश्यकता है।

Encourage learners to speak only English in classroom

अंग्रेजी सिखाने का एक अच्छा तरीका यह है कि learner को classroom में अधिक से अधिक English बोलने का अवसर दिया जाए और अन्य भाषाओं को उतने समय तक discourage किया जाए इससे उन्हें सीखी हुई English को खूब अभ्यास करने का अवसर मेलेगा। इस तरह सीखने वाले को और सिखाने वाले को भी पूरी opportunity मिलती है :

- जब बच्चे incorrect English बोलें तो उसी समय proper way में correct कर दिया जाए

- इसके लिए “repeat after me” और/या “answer me approach” बहुत कारगर होता है। यहाँ सिखाने वाला कोई statement प्रस्तुत करे या सीखने वाले से कोई question करे तो उसका उत्तर English में देने के लिए कहे
- ग़लत बोलने पर उसकी हंसी न उड़ाई जाए बल्कि वह अगर English बोलते हुए अपने home language के साथ भी उत्तर देता है तो उसका सम्मान किया जाए। सीखने के process में ग़लतियाँ होना स्वाभाविक है। बच्चों के pronunciation पर उसके home language का असर रहेगा ही। English के सही pronunciation की practice में समय तो लगेगा ही। जो language बच्चा पहले से जानता है उसके grammar का भी असर उसकी भाषा पर होगा इस बात को भी analyse करने और सही remedy करने की ज़रुरत होती है।

Provide verbal and written instruction:

जब भी किसी activity को explain करनी हो या किसी कार्य के लिए कोई direction देना ही तो इसके लिए verbal और written दोनों instruction दिए जाएँ। इसका लाभ यह होगा कि verbal instruction को सुनने और written instruction को देखने का अवसर एक साथ मिलेगा। यह word association और pronunciation दोनों में सहयोगी होगा। Activity को explain करने के लिए जो direction देने हैं उसकी print copy बच्चों को पहले उपलब्ध करा दिया जाए या बोर्ड पर साफ–साफ लिख दिया जाए ताकि सब पढ़ सकें।

Promote diverse modes of learning:

English को second language के रूप में सिखाने के लिए ज़रूरी है कि variety का ध्यान रखा जाए। Learning diversity यहाँ बहुत ज़रूरी है चूंकि सीखने के ढंग सबके अलग अलग होते हैं इसके लिए सिखाने वाले के लिए इनपर ध्यान दें:

- Use speaking
- Employ writing
- Encourage reading
- Suggest listening
- To promote all the modes equally

Break lessons into small pieces:

नए लोगों या beginner को English सिखाने के लिए lesson को 10-10 मिनट के pieces में बाँट दिया जाए। इसका लाभ यह होगा कि उनका attention बना रहेगा और lesson बोझिल भी नहीं होगा। ज़रूरी नहीं कि 10 मिनट तक उनके साथ रहा जाए। बता देने के बाद उन्हें free छोड़ दिया जाए।

- हर एक mini lesson के बाद दूसरे बिलकुल different type के lesson पर जाएँ इससे learners अपने को fresh महसूस करेंगे और उनका attention और interest दोनों बना रहेगा।
- अपने mini lesson को daily change करना चाहिए। नए–नए lesson लाए जाएँ। जब एक lesson सीख जाये तब ही दूसरा lesson शुरु करना चाहिए। Topic वही रहे मगर strategy बदलती रहनी चाहिए जबतक कि वह सीख न लें।

Use games to reinforce the topic of the day:

Games के द्वारा मज़ा लेकर सीखने का अवसर होता है और उन्हें new और different ways से think करने का भी अवसर मिलता है।

Use visuals to teach language:

Second language के तौर पर English सिखाते हुए word association के निर्माण के लिए visual का use बहुत ही important होता है। Visual के द्वारा word association को promote करने से learner खुद new words और ideas के बीच stronger connection बना पाएंगे। इसके लिए इनका use किया जा सकता है:

- Pictures and photographs
- Post & cards
- Video
- Map
- Comic books – Comic book ज़्यादा अच्छा होता है क्योंकि इसमें visuals और text दोनों होते हैं।

Promote the use of targeted language apps on mobile device:

सिखाते समय reinforcement के लिए mobile device पर कुछ ख़ास apps का help लिया जा सकता है।

Use of social media:

Social media पर colloquial phrases और commonly used words का बड़ा लाभ होता है। यहाँ

यह opportunity भी होती है कि सीखे गये words का usage और practice करने का भी मौका है।

Teach the Tense:

अब बच्चों/learners को Tenses, Structure of sentences, sequence of tense आदि सिखाना चाहिए क्योंकि अपने भावों को सही अर्थ प्रदान करने के लिए और घटनाओं के सही समय और काल को दर्शाने के लिए यह अत्यावश्यक है। इनमें भाषा की इतनी समझ विकसित हो जाती है कि अब इनसे इस सम्बन्ध में बातें की जा सकती है। इसी के साथ Simple sentence, complex sentence और compound sentence बातें की जाएँ, Clause सिखाया जाए, Direct और Indirect Narration, Active and Passive Voices, punctuation, connectors आदि की पूर्ण रूप से सिखाया जाये और इसका भरपूर practice कराया जाए।

Example के लिए textbook को और पढ़ चुके text को आधार बनाया जाए।

Dictation इस level में भी जारी रखा जाए। जो word, sentence या passage बच्चों को लिखाया जाता है तो जब वह note कर ले तब उन्हें पढ़ने को कहा जाए फिर उसे देखरकर सुधार जाए और फिर एकबार उनसे पढवाया जाए।

Monitor learners* progress constantly: इससे बहुत अंतर नहीं पड़ता कि उन्हें किया सिखाया जा रहा है और वे कौन सी activity कर रहे हैं परन्तु ज़रूरी यह है कि constantly उनकी monitoring की जाए इससे यह पता चलेगा कि उनका कितना progress हुआ है या वे कितना struggle कर रहे हैं। Classroom में घूम–घूमकर और बच्चों से बातें करके पता किया जाए कि उनको क्या trouble है और इसके लिए किया help चाहिए, इसे कैसे solve किया जाए।उन्हें हर समय सहयोग की आवश्यकता है।

M. Arshad Reza
Teacher and ELT specialist, Nalanda

हमने कीटाणुओं के बारे में कैसे जाना?

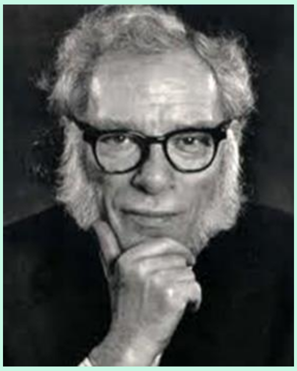

आईज़ैक असिमोव

हिंदी अनुवादः अरविन्द गुप्ता

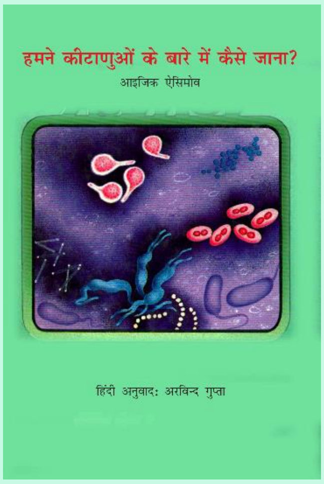

पुरानी लैटिन भाषा में किसी छोटी चीज से बड़ी चीज; या जीवद्ध के विकसित होने की प्रक्रिया को 'जरमन' कहा जाता था। अंग्रेजी में इसे संक्षिप्त में 'जर्म' के नाम से जाना गया।

पर इस छोटे से 'जर्म' या नन्हें से जीव का आकार क्या होगा?

शुरू में लोगों को जीवन के बारे में बस इतना पता था कि कुछ छोटे बीजों से बड़े पेड़ पैदा होते हैं। कई बार इन बीजों को देख पाना भी मुश्किल होता था। क्या जीवन का ऐसा छोटा अवयव भी हो सकता है जिसे देख पाना भी मुश्किल हो? इसके बारे में कैसे पता करें?

...... आगे पढ़ने के लिए लिंक पर क्लिक करें।

Book: HOW DID WE KNOW ABOUT GERMS - ASIMOV HINDI: ARVIND GUPTA

Book PDF Link: http://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/asimov-germs-h.pdf

संग्रहः शाश्वत बसु
आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन एवं प्रशिक्षु शिक्षकों का क्षमतावर्धन

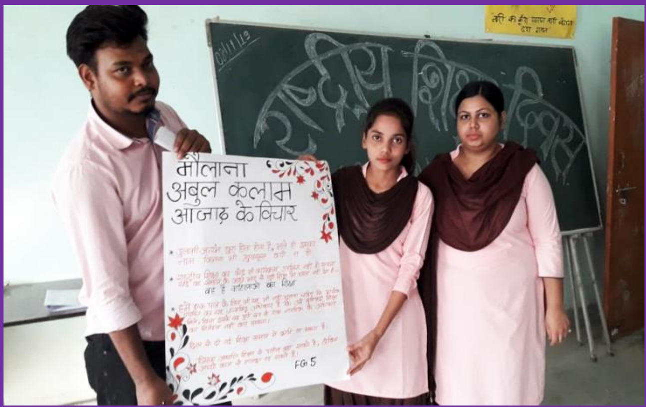

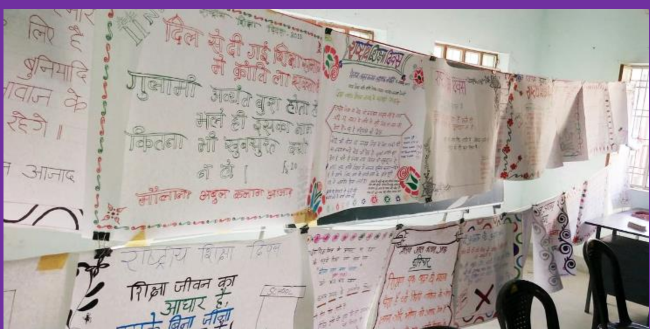

वार्षिक कैलेन्डर के अनुसार जयंती का आयोजन एवं महत्वपूर्ण दिवसों का मनाया जाना प्रत्येक शैक्षिक संस्थान के लिए आम बात है। सामान्यतः ऐसे अवसरों पर शिक्षक संकाय सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलन/माल्यार्पण के साथ व्याख्यान दिया जाता है। इच्छुक छात्र–छात्राओं द्वारा सम्बन्धित विषय पर भाषण के साथ–साथ कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। संस्थान परिवार के शेष सदस्य दर्शक के रूप में आयोजित कार्यक्रमों का आनंद उठाते हैं। इन कार्यक्रमों में अधिकांशतः ऐसा होता है कि प्रशिक्षुओं का एक वर्ग सदैव दर्षक दीर्घा में ही रह जता है तथा अपने संकोच व मंच भय के कारण अपने अन्दर की प्रतिभा को कभी जागृत नहीं कर पाता है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि मनुष्य के अन्दर समय शक्तियाँ विद्यमान है और शिक्षा का कार्य उनका प्रकटीकरण है। अतः एक शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान के रूप में डायट, नालन्दा नें इस ओर एक नवाचार किया जिसके अन्तर्गत किसी भी कार्यक्रम के प्रस्तुतीकरण आयोजन में सभी प्रशिक्षुओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कार्यक्रम के आयोजन से पूर्व सूचना व सम्प्रेषण तकनीक (ICT) के संसाधनों का उपयोग करते हुये जैसे– इन्टरनेट, कम्प्यूटर, मोबाईल आदि/कार्यक्रम में निर्धारित विषय/शीर्षक पर उपलब्ध विभिन्न विडियो क्लीप, पठन सामग्री को व्यक्तिगत रूप से देखने व पढने का अवसर दिया जाता है।

सभी प्रशिक्षुओं को 5–7 सदस्यों के छोटे समूह जिन्हें फंक्शन ग्रुप कहते हैं में विभक्त कर दिया जाता है। इस समूह का निर्माण भी प्रशिक्षु स्वयं करते हैं। इसके बाद उन्हें एक धंटे का समय आपसी चर्चा व विमर्श के लिए दिया जात है। इस चिन्तन सत्र में समूह यह निश्चित करता है कि हमें किस प्रकार से या किस तरीके से या कौन सी विद्या का प्रयोग कर सम्बन्धित विषय पर प्रस्तुतीकरण करना है। जैसे– चार्ट पेपर पर लिखकर, चित्र बनाकर, पीपीटी0/नाटक/कहानी/कविता/गीत या स्लोगन आदि। अब निर्धारित समय पर सभी समूह अपनी प्रस्तुतीकरण करने के लिए तैयार होते हैं। प्रत्येक समूह का प्रदर्शन समय निर्धारित रहता है व सभी समूह अपना प्रदर्शनी प्रस्तुत करते हैं। इसके बाद संकाय सदस्यों द्वारा उक्त विषय पर विचार व्यक्त कर तथा प्रत्येक समूह को उनके प्रदर्शन पर उचित प्रतिपुृष्टि करते हुए कार्यक्रम का समापन किया जाता है।

कार्यक्रम आयोजन के इस परिवर्तित प्रारूप के कारण सभी प्रशिक्षुओं को ICT के संसाधनों का व्यावहारिक उपयोग करना सिखाया जाता है तथा सहभागिता के आधार पर प्रशिक्षु अपन ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। अपने विचारों व दृष्टिकोण को अपने समूह–सदस्यों के समक्ष रखना व उस पर चर्चा करना तथा त्रुटि होने पर विषय–विषेषज्ञ की सहायता प्राप्त करना। इन सभी प्रक्रियाओं में प्रशिक्षु स्वयं सक्रिय रहता है व एक चालक की भाँति चालक की सीट पर बैठा होता है व ज्ञान तथा शिक्षण कौशलों का विकास करता है। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक एक सुगमकर्ता के रूप में रहता है व प्रशिक्षुओं के अन्दर नतृत्वकर्ता के गुणों का विकास करता है।

डा० रश्मि प्रभा, प्राचार्या,
डायट, नूरसराय, नालंदा, बिहार

मिडलाइन सर्वे से प्राप्त अध्यापक शिक्षा- संस्थान के विकास सूचकांक सार संक्षेप

जून 2019 में सैंपल डाटा के आधार पर अध्यापक शिक्षा संस्थानों के विकास सूचकांक जानने के लिए मिडलाइन सर्वे करवाया गया। 2016 में करवाए गए बेसलाइन सर्वे की तुलना में सभी मुख्य आयामों (आधारभूत संरचना, समता, अकादमिक एवं क्षमता/गवर्नेंस) के सूचकांकों में जिला एवं प्रखंड स्तरीय संस्थानों में सुधार आया है। प्रस्तुत है मिडलाइन सर्वे से प्राप्त अध्यापक शिक्षा–संस्थान के विकास सूचकांक सार संक्षेप की तालिकाएँ।

A . मिडलाइन सर्वे की जिला स्तरीय अध्यापक शिक्षा–संस्थान के विकास सूचकांक की सार तालिकाएँ

Table 1 मिड लाइन सर्वे के अनुसार, मुख्य सूचक वार जिला स्तरीय अध्यापक शिक्षा–संस्थान के सूचकांक

आधारभूत संरचना सूचकांक						
सूचक	बिल्डिंग की सुविधा	शौचालय की सुविधा	सुरक्षा	सूचना एवं संचार तकनीक की उपलब्धता	प्रशिक्षण के लिए कंप्यूटर की उपलब्धता	उर्जा की वैकल्पिक व्यवस्था
सूचकांक	0.63	0.78	0.59	0.72	0.63	0.76

समता सूचकांक		
सूचक	महिला शौचालय	दिव्यांग शौचालय
सूचकांक	0.61	0.44

अकादमिक सूचकांक					
सूचक	प्रशिक्षण सामग्री का विकास	रिसर्च गतिविधियाँ	संकाय सदस्यों की बहाली	संकाय सदस्यों की योग्यता	संकाय सदस्यों का विकास
सूचकांक	0.17	0.25	0.74	0.93	0.33

क्षमता/गवर्नेंस सूचकांक							
सूचक	अकादमिक एवं प्रसाशन कार्यों में कंप्यूटर का उपयोग	शिकायत निस्तारण की स्थिति	बजट उपयोगिता	वित्तीय प्रबंधन स्टाफ की उपलब्धता	एकाउंटिंग में सुचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग	अध्यापक शिक्षा संस्थान का वेबसाईट की स्थिति	गैर शैक्षणिक स्टाफ की स्थिति
सूचकांक	0.82	0.50	0.49	0.11	0.00	1.00	0.60

Source: Midline TEIDI survey June 2019

Table 2 जिला स्तर के अध्यापक शिक्षा-संस्थान के मुख्य आयाम वार भारित प्रदर्शन

जिला स्तर के अध्यापक शिक्षा–संस्थान के प्रदर्शन सूचकांक			
आयाम	मिडलाइन भारित सूचकांक	भार	जिला स्तर पर संस्थानों का भारित सूचकांक
आधारभूत संरचना	0.69	35	0.57

समता	0.54	15	
अकादमिक	0.49	35	
क्षमता/गवर्नेंस	0.48	15	

Source: Midline TEIDI survey June 2019

समग्रता में प्रखंड स्तरीय अध्यापक शिक्षा–संस्थान का विकास सूचकांक 0-57 है इसका अर्थ यह है की प्रखंड स्तरीय संस्थान वांछित प्रदर्शन के 57 % के स्तर पर काम कर रहे हैं।

B. मिडलाइन सर्वे की प्रखंड स्तरीय अध्यापक शिक्षा–संस्थान के विकास सूचकांक की सार तालिकाएँ

Table 3 मिड लाइन सर्वे के अनुसार मुख्य सूचक वार प्रखंड स्तरीय अध्यापक शिक्षा–संस्थान के सूचकांक

आधारभूत संरचना के सूचकांक				
सूचक	**प्रशिक्षण कक्ष की सुविधा**	**शौचालय की सुविधा**	**सुरक्षा एवं पर्यावरण बंधुत्व**	**सुचना एवं संचार तकनीकी की सुविधा**
सूचकांक	0.72	0.63	0.75	0.13
समता के सूचकांक				
सूचक	**लिंग अनुपात**		**दिव्यांग शौचालय**	
सूचकांक	0.76		0.45	
अकादमिक सूचकांक				
सूचक	**अकादमिक अंतःक्रिया**		**रिसोर्स पर्सन की स्थिति**	
सूचकांक	0.40		0.67	
क्षमता / गवर्नेंस के सूचकांक				
सूचक	**प्रसाशन में कंप्यूटर का उपयोग**	**अवानातन एवं खर्च**	**वित्तीय प्रबंधन का स्टाफ**	
सूचकांक	0.24	0.95	0.82	

Source: Midline TEIDI survey June 2019

Table 4 प्रखंड स्तर के अध्यापक शिक्षा–संस्थान के मुख्य आयाम वार भारित प्रदर्शन

प्रखंड स्तर के अध्यापक शिक्षा–संस्थान के प्रदर्शन सूचकांक			
आयाम	**मिडलाइन भारित सूचकांक**	**भार**	**प्रखंड स्तर पर संस्थानों का भारित सूचकांक**
आधारभूत संरचना	0.56	35	0.58
समता	0.67	15	
अकादमिक	0.54	35	
क्षमता ६ गवर्नेंस	0.64	15	

Source: Midline TEIDI survey June 2019

समग्रता में प्रखंड स्तरीय अध्यापक शिक्षा–संस्थान का विकास सूचकांक 0.58 है इसका अर्थ यह है की प्रखंड स्तरीय संस्थान वांछित प्रदर्शन के लगभग 58 : के स्तर पर काम कर रहे हैं ।

तालिका की समझ

सूचकांक आदर्श स्थिति एवं वर्तमान स्थिति के बीच का अनुपात है इससे पता चलता है कि आदर्श स्थिति के हम कितने करीब पहुंचे हैं। सूचकांक सामान्यतः शून्य से एक के बीच रहता है। अगर सूचकांक एक के करीब हो तो आदर्श स्थिति के पास की स्थिति बनती है और अगर सचकांक शन्य के करीब हो तो स्थिति उतनी ही खराब मानी जाएगी।

नीरज दास गुरु
सतत वृतिक विकास
आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

परख - 4

विषयों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया, किताब के कंटेंट का विनिमयन, किताब के अतिरिक्त गतिविधियाँ, मूल्यांकन एवं मूल्यांकन के आधार पर सपोर्ट पर आपकी स्थिति क्या है? आइये खुद को परखें। इस प्रश्नावली के आधार पर खुद का आकलन करें। निम्नलिखित प्रश्नों में जिनका उत्तर हाँ है उसके लिए खुद को 1 अंक दें। कुल 25 अंक हैं। आपको कितने प्रतिशत अंक मिले? अपने अंक साथियों के साथ साझा करें।

क्रम संख्या	विषय	सूचक	हाँ के लिए 1 ना के लिए 0 लिखें
1	**विषयों को सीखने सिखाने की प्रक्रिया**	क्या आप जिन कक्षाओं में पढ़ाते है, पढ़ते हैं को विषयों के अपने वर्ग के वर्गवार आउटकम की समझ है?	
2		क्या आप समझते हैं कि बच्चों की भागीदारी को बढ़ानी होगी?	
3		क्या आप संवाद करते वक्त उनको ज्यादा बोलने का मौका देते हैं?	
4		क्या आप बच्चों को करके सीखने का मौका देते हैं?	
5		क्या आप बच्चों को परिवेश से जोड़कर सिखाते हैं?	
6		क्या आप बच्चों को प्रश्न पूछने के अवसर देते हैं?	
7		क्या आप प्रश्न पूछने के बाद रुक कर उनके उत्तर सुनते हैं?	
8		क्या आप बच्चों के समूह बनाकर आपस में सीखने का मौका देते हैं?	
9	**किताब के कंटेंट का विनिमयन**	क्या आप पाठ के शुरुआत में पाठ से जोड़ने के लिए परिवेश से जुड़े खुले प्रश्न पूछते एवं उस पर चर्चा करते हैं?	
10		क्या आप पाठ के अंत में 'क्या सीखा' इसका सार संक्षेप बच्चों के साथ मिल कर चर्चा करते हैं?	
11		क्या आप पाठ से जुड़े बच्चों के प्रश्न पूछने के लिए आमंत्रित करते हैं?	
12		क्या आप पाठ के अंत में दिए गए उत्तर को हल करने के लिए बच्चों को आपस में चर्चा करने का मौका देते हैं?	
13		क्या आप सिखाने के दौरान बच्चों को रूचि के गतिविधियों में लगाते हैं ?	
14	**किताब के अतिरिक्त गतिविधियाँ**	क्या आप पाठ से जुड़े सहायक सामग्री बनाने में बच्चों को शामिल करते हैं?	
15		क्या आप विषय की प्रकृति को समझते हुए पाठ से जुड़े गतिविधियों में सभी बच्चों को शामिल करते हैं?	
16		क्या आप बच्चों को लाइब्रेरी का इस्तेमाल करने देते हैं?	
17		क्या आप किताब से सीखी बातें किस प्रकार जीवन से जुड़ी है इस पर चर्चा करते हैं?	
18	**मूल्यांकन**	क्या आप सीखने के आउटकम के आधार पर बच्चो के सीखने की जांच करते हैं?	
19		क्या आप बच्चों की गतिविधियों का अवलोकन करके उसके समझ के बारे में धारणा बनाते हैं?	
20		क्या आप बच्चों की कॉपी को नियमित रूप से जांचते हैं?	
21		क्या आप बच्चों के सीखने के स्तर एवं गति के के बारे में जानते हैं?	
22	**मूल्यांकन के आधार पर सपोर्ट**	क्या आप अवलोकन के आधार जो सिखाना है और जो सीख चूका है उसके गैप को समझते हैं?	
23		क्या आप बच्चो के सीखने के स्तर एवं गति को ध्यान में रख कर उनके सीखने की योजना बनाते हैं?	
24		क्या आप बच्चों के मनोबल को बढ़ाने का प्रयास करते हैं?	
25		क्या आप बच्चों को सफल बनाने के लिए प्रयास करते हैं?	

नीरज दास गुरु
सतत वृतिक विकास
आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

MATHS Activity

अरविन्द गुप्ता

कलाईडोस्कोप (बहुरूपदर्शक)

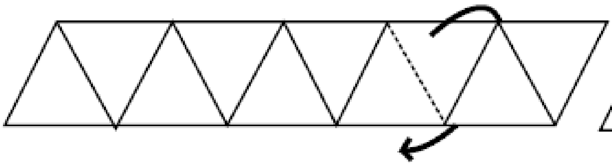

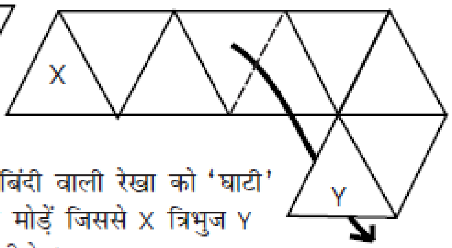

1. एक कोणमापी की मदद से 10 समभुज त्रिभुजों की एक पट्टी बनाएं। त्रिकोणों की हर भुजा 5-सेमी लम्बी हो। बिंदी वाली रेखा को 'पहाड़ी' जैसे मोड़ें।

2. बिंदी वाली रेखा को 'घाटी' जैसे मोड़ें जिससे X त्रिभुज Y के नीचे आए।

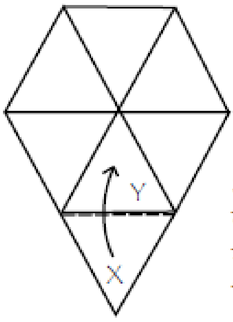

3. त्रिभुज X पर गोंद लगाएं और फिर उसे मोड़कर त्रिभुज Y पर चिपकाएं।

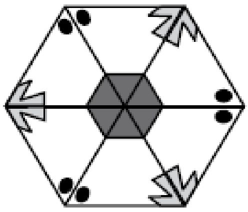

4. कलाईडोस्कोप अब बन कर तैयार है। उसे आप बताए तरीके द्वारा सजाएं या फिर अपनी मनमर्जी से उसपर नमूने बनाएं।

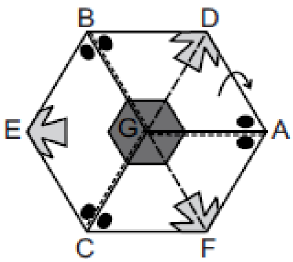

5. नमूने को बदलने के लिए केंद्र से निकलने वाले सभी मोड़ों को नीचे की ओर मोड़ें।

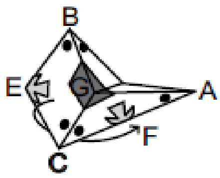

6. E को पीछे की ओर मोड़ें जिससे कि वो F को छुए।

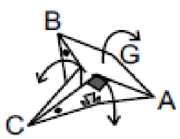

7. अगर अब आप ऊपर की तरफ से खोलेंगे...

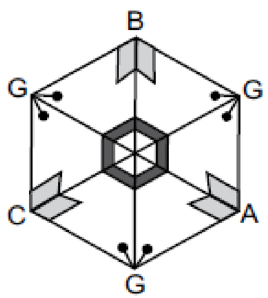

8.... तो आपको एक नया नमूना दिखेगा। इसी तरह कलाईडोस्कोप को घुमाते रहें और उसपर नए-नए नमूने बनाते रहें।

9 कलाईडोस्कोप को पलटें। उसे लगातार घुमाते रहे और उसपर नए डिजाइन बनाते रहें। इस प्रकार आप घूमने वाली सचित्र पुस्तक भी बना सकते हैं।

संग्रहः शाश्वत बसु
आई० एस० ए० – एस०सी०ई०आर०टी०

Science Activity

अरविन्द गुप्ता

हाथी की सूंड

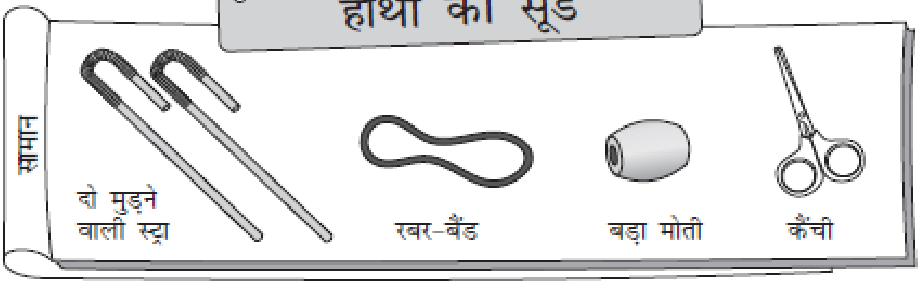

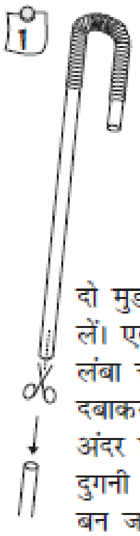

दो मुड़ने वाली स्ट्रा लें। एक को 2-सेमी लंबा चीरें। फिर उसे दबाकर दूसरी स्ट्रा के अंदर घुसा दें। इससे दुगनी लंबाई की स्ट्रा बन जायेगी।

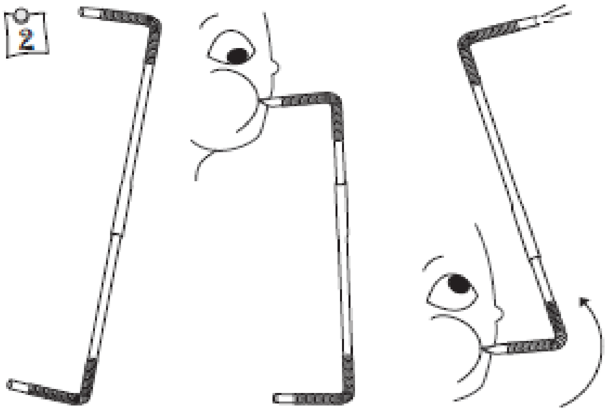

स्ट्रा के दोनों सिरों को एक ही ओर मोड़ें। अगर आप एक सिरे से फूंकेंगे तो दूसरा सिरा हाथी की सूंड जैसे ऊपर की ओर उठेगा।

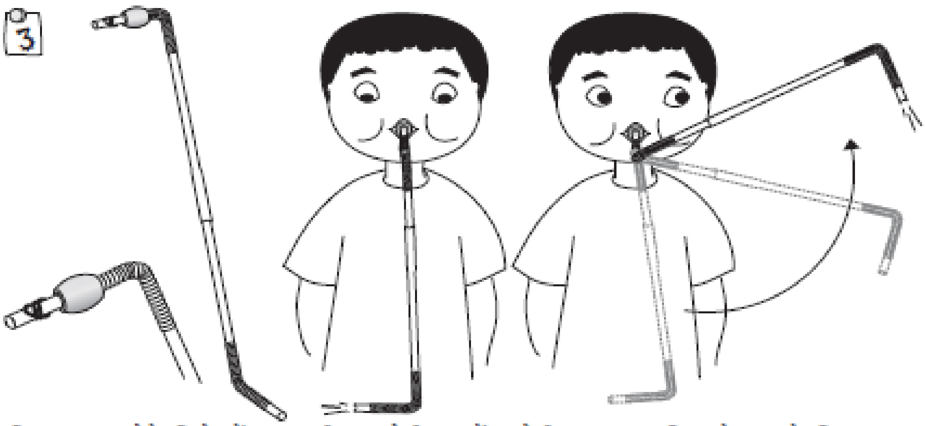

फिर एक छोटे सिरे में एक ढीला मोती डालें। मोती बाहर न निकले इसके लिए रबर-बैंड लगायें। दोनों छोटे सिरे समतल न होकर अलग-अलग 'प्लेन' में हों। फिर मोती को ओंठों से दबाकर फूंकें। स्ट्रा गोल-गोल चक्कर लगायेगी।

संग्रहः शाश्वत बसु

आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0

SCERT-ISA द्वारा नवम्बर–दिसम्बर 2019 की गतिविधियाँ

- D.El.Ed. कोर्स प्रथम वर्ष के 12 विषयों के सामग्री-विकास के लिए दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें सभी विषयों के प्रारूप तैयार किए गए। इनमें बिहार राज्य के अनुभव, संदर्भ के साथ ICT का समावेशन किया जा रहा है।
- शिक्षकों के सतत् वृत्तिक विकास के लिए online मॉड्यूल ***'सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में ICT का समावेशन'*** पर शिक्षक शिक्षण संस्थानों के Nodal Persons के लिए उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन SCERT में 27 नवम्बर 2019 को किया गया। यह कोर्स पाँच सप्ताहों का है तथा निःशुल्क है। कोर्स को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद SCERT द्वारा online certificate दिया जाएगा। इस मॉड्यूल के उद्देश्य हैं:
    - **सीखने सिखाने की प्रक्रिया मे-ICT के समावेशन हेतु शिक्षकशिक्षकों को सहयोग देना/प्रशिक्षकों- &** documentation **एवं प्रस्तुतीकरण में** ICT **का उपयोग करना।**
    - **वेब** (Web) **के मौजूद संसाधनों का उपयोग कर शोध एवं परियोजना कार्य करना।**
    - **विभिन्न** software application **और** digital devices **का उपयोग कर विषयवस्तु के विकास एवं प्रबंधन के - शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।/प्रशिक्षकों-लिए शिक्षक**
    - **शिक्षक शिक्षकों के बीच/प्रशिक्षकों**-Professional Learning Communities (PLC) **का निर्माण करना।**

प्रत्येक शिक्षक शिक्षण संस्थान एक, दो या तीन चरणों में 500 शिक्षकों को ये कोर्स पूरा कराएँगे। 48 शिक्षक शिक्षण संस्थानों के संकाय सदस्यों ने Nodal Person के रूप में इस कार्यशाला में भाग लिया। सभी प्रतिभागियों ने कोर्स में स्वयं को नामांकित किया तथा कोर्स पूर्व सर्वे को पूरा किया। यह कोर्स समय प्रतिबंधित है, 9 दिसम्बर 2019 से शुरू होगा और 10 जनवरी 2020 को समाप्त होगा।

- विद्यालय शिक्षा समिति के जिला स्तरीय प्रशिक्षकों/उत्प्रेरकों का एक-दिवसीय प्रशिक्षण SCERT परिसर में दिनांक 6, 7 एवं 8 नवम्बर 2019 को क्रमशः पटना, गया एवं सारण जिले के लिए आयोजित किया गया है। इस प्रशिक्षण में SCERT के संबंधित निकाय सदस्य एवं ISA-SCERT के SMC प्रभारी प्रशिक्षक के रूप में शामिल हुए। प्रतिभागियों को विद्यालय शिक्षा समिति की एक-दिवसीय बैठक के आयोजन एवं विद्यालय monitoring के लिए SSCA app के उपयोग के संबंध में जानकारी दी गयी। इस बैठक में संबंधित तीन जिलों के सात चयनित प्रखण्डों, जहाँ प्रथम चरण में यह कार्यक्रम pilot किया जाना है, के एक-एक प्रखण्ड साधनसेवी, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक एवं एक विद्यालय के प्रधानाध्यापक भी सम्मिलित हुए। जिला स्तर पर कार्यक्रम का संचालन दिसम्बर माह में किया जाना है।
- शिक्षक शिक्षण संस्थानों के लिए प्रबंधन सूचना प्रणाली (Management Information System) के data collection format को अंतिम रूप दे दिया गया है और कुछ शिक्षक शिक्षण संस्थानों में pilot रूप में डाटा का संग्रह किया जाएगा। तत्पश्चात्, आवश्यक संशोधनों के बाद शोध एवं प्रशिक्षण निदेशालय को प्रस्तुत किया जाएगा।
- SCERT के वेबसाइट पर Professional Learning Community के आठ समूहों (शिक्षा, प्राकृतिक विज्ञान, अनुसंधान, सूचना संचार प्रौद्योगिकी, गणित, भाषा-शिक्षण, समाज विज्ञान, वानिज्य) का गठन किया गया है। Professional Learning Community https://eshikshan.biharscert.in/mod/forum/ लिंक पर देखा जा सकता है। शिक्षकों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए, Face book में समर्पित page: Bihar Teacher Education Network शुरू किया गया है। वर्तमान में 210 शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षको तथा अन्य विशेषज्ञों इस समुदाय से जुड़े हैं और यह संख्या बढ़ रही है।
- NCERT, दिल्ली में निष्ठा portal को संचालित करने का दूसरे दौर का प्रशिक्षण 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2019 को आयोजित किया गया जिसमें 21 ज़िलों के राज्य समन्वयकों और ज़िला समन्वयकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण को निदेशक SCERT बिहार ने संबोधित किया।
- परियोजना की प्रगति से संबंधित कई बैठकें आयोजित हुई जिसमें निम्नलिखित प्रमुख हैं:
    - दिल्ली में विश्व बैंक के साथ बैठक।
    - BSEIDC के साथ अनेकों अध्ययन (Teacher attendance, TEIDI, Effectiveness of Training, Use of ICT, Role of SMC, TEI-MIS, Diksha portal) के TOR से संबंधित समीक्षा बैठक।
    - BSEIDC के साथ ICT की प्रगति पर समीक्षा बैठक।

बाल कविता

अब तो स्कूल जाते हैं

जब हम बिल्कुल छोटे थे
नहीं ज़रा भी मोटे थे।

करते थे सब प्यार मुझे
देखते सौ-सौ बार मुझे।

मम्मी दूध पिलाती थीं
नानी कपड़े लाती थीं।

पापा सब कुछ लाते थे
झूले हमें झुलाते थे।

फिर जब कुछ हम बड़े हुए
धीरे-धीरे खड़े हुए।

लगे बोलने बातें सारी
खाते रोटी और तरकारी।

अब तो स्कूल जाते हैं
घर में कम रह पाते हैं।

डा जियाउर रहमान जाफरी
हाई स्कूल माफ़ी वाया- अस्थावां, नालंदा, बिहार

आपके विचार

आपके अनुभव अमूल्य है। हम चाहते हैं कि आपसे सार्थक संवाद स्थापित हो। इस अंक में हम पुनः पिछले विषय ही आपके समक्ष रख रहे है। आपके विचार आलेख के रूप में अपेक्षित है।

1. शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे ?
2. कक्षा प्रबंधन और शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ

आप अपने संकुल, विद्यालय, बी0 आर0 सी0 में चर्चा भी कर सकते है। चर्चा का समेकन भी हमें प्रेषित कर सकते हैं।

आप अपने विचार अपने समूह के अलावे हमें भी भेज सकते हैं।

Website: www.biharscert.in

e-Mail - esamvaad.scert@gmail.com WhatsApp – +91 9973462621

Implementation Support Agency for SCERT, Bihar

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
महेन्द्रू, पटना, बिहार - 800006